THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI SUSHMA SWARAJ): Now we shall take up clarifications in relation to the Calling Attention to matter of urgent public importance. Shri J.P. Mathur.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Situation Arising out of Large-Scale Disinvestment in Public Sector Undertaking—Contd.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदया, फाइनेंस मिनिस्टर साहब तो चले गये है।

श्री पर्वतनेनि उपेन्द्र (आन्ध्र प्रदेश) : फाइनेंस मिनिस्टर तो चले गये है (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : फाइनेंस मिनिस्टर अभी आ जाते हैं, आप बोलना तो शुरू कीजिये।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : पूछेंगे किन से, वित्त मंत्री जी तो चले गये ?

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): अभी आ रहे हैं। यही गये है चेयरमन साहब के चेम्बर तक।

SHRI KAMAL MORARKA (Rajasthan): Will this go on for 20 minutes and again on some other day?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI SUSHMA SWARAJ): I think, at five O'clock the Minister for Home Affairs will give the reply to the debate.

SHRI KAMAL MORARKA: At five O'clock we have a statement.

श्री जादीश प्रसाद माथुर : 10–12 मिनट हैं।

उपसभाध्यक्ष : आप बोलना तो शुरु कीजिये। अभी पांच बजने में 20 मिनट है।

श्री एस० जयपाल रेड्डी (आन्ध्र प्रदेश) : इसका मतलब है आप 20 मिनट लेंगे।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : ले भी सकता हूं और नहीं भी ले सकता हूं। (**व्यवधान**)

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त) : एक मिनट, सदर साहेबा, मैं एक अहम बात कहने के लिए इजाजत चाहता हूं। यह जो तमाम डिसइनवेस्टमेंट का सिलसिला शुरू हुआ है, यह सी० ए० जी० की रिपोर्ट जो आई है, उसके बेसेज पर शुरू हुआ है। सी० ए० जी० की रिपोर्ट में जो कुछ भी कहा गया है, वह दुरुस्त कहा गया है या गलत कहा गया है, यह बिलकुल अलाहिदा बात है लेकिन जो कुछ भी कहा गया है, वह सब का.....(**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): आप किस पर बोल रहे हैं? प्वाइंट आफ आर्डर पर बोल रहे हैं?

श्री सिकन्दर बख्त : मैं डिसइनवेस्टमेंट के सिलसिले पर बोल रहा हूं। यह स्टेटमेंट शुरू से ही गलत आया है। मैं यह कह रहा हूं कि इस पूरे मसले का ताल्लुक जो है वह डिपार्टमेंट आफ पब्लिक (इंटरप्राइजेज) का है। यह स्टेटमेंट उस डिपार्टमेंट से ताल्लुक रखने वाले मिनिस्टर की तरफ से यहां आना चाहिये था। यह जो फाइनेंस मिनिस्टर का स्टेटमेंट आया है, इसके ऊपर'' (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): आपकी समझ में किस मंत्रालय से संबंधित होना चाहिये (**व्यवधान**)

श्री सिकन्दर बख्त : मुझे समझ में नहीं आता। बुनियादी बात यह है कि यह डिपार्टमेंट किस मिनिस्टर के मातहत है। डी० पी० ई० का सारा का सारा सिलसिला जो है, डी० पी० ई० की जो कुछ भी कारगुजारियां है उनके संबंध में डी० पी० ई० के मिनिस्टर का बयान आना चाहिये था और उस पर क्लेरीफिकेशंस का जवाब उनकी तरफ से आना चाहिये था। **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : मुझे लगता है कि आर्थिक क्षेत्र से संबंधित किसी भी मसले का अगर कोई भी मसला है तो वित्त मंत्री जी जवाब देने के लिए कंपीटेंट है।

श्री सिकन्दर बख्त : लेकिन मैं यह अर्ज करना चाह रहा हूं कि डायरेक्टली किसी एक महकमे से संबंधित यह मामला है। यह महकमा सीधे प्रधान-मंत्री जी के मातहत है। इसमें प्रधान-मंत्री जी का बयान आना चाहिये था, उस पर क्लेरीफिकेशंस आनी चाहिये थीं। जो मसले उठाये गये हैं फाइनेंस मिनिस्टरी का उनसे इनडायरेक्टली ताल्लुक है। यह मसले सारे के सारे डिपार्टमेंट आफ पब्लिक इंटरप्राइजेज के मुत्तालिक है। सारे एलीगेशंस और सारी कंप्लेंट्स, जो गलत कार्यवाही का मसला है, वह डिपार्टमेंट आफ पब्लिक इंटरप्राइजेज से ताल्लुक रखता है। इस-लिए मेरा कहना यह है, मैं क्षमा चाहता हूं, इस पर प्रधानमंत्री जी का बयान आना चाहिये और उस पर क्लेरीफि-केशंस आनी चाहिये।

† [] नीता वरोधी दल "श्री सिकन्दर बख्त"
मैं डिस इनवेस्टमेंट के सिलसिले पर बोल रहा हूं

† []Transliteration in Arabic Script

یہ اسٹیٹمنٹ شروع سے ہی غلط آیا ہے۔ میں یہ کہہ رہا ہوں کہ اس پورے مسئلے کا تعلق جو ہے وہ ڈپارٹمنٹ آف پبلک انٹرپرائزز کا ہے یہ اسٹیٹمنٹ اس ڈیپارٹمنٹ سے تعلق رکھنے والے منسٹر کی طرف سے یہاں آنا چاہیئے تھا یہ جو فائنانس منسٹر کا جو اسٹیٹمنٹ آیا ہے اس کے اوپر ... "مداخلت" ...

اپ سبھاادھیکش: آپ کی سمجھ میں کس منسٹر الیہ سے سمبندھت ہونا چاہیئے "مداخلت"

شری سکندر بخت: مجھے سمجھ میں نہیں آتا۔ بنیادی بات یہ ہے کہ یہ ڈپارٹمنٹ کس منسٹری کے ماتحت ہے۔ ڈی۔ پی۔ ای کا سارے کا سارا سلسلہ جو ہے۔ ڈی۔ پی۔ ای کی جو کچھ بھی کارگزاریاں ہیں ان کے سمبندھ میں ڈی پی ای کے منسٹر کا بیان آنا چاہیئے تھا اور اس پر کلیری فیکیشن کا جواب ان کی طرف سے آنا چاہیئے تھا ... "مداخلت" ...

آپ سبھاادھیکش: مجھے لگتا ہے کہ آپکے اکثیتر سے سمبندھت کسی بھی مسئلے کا اگر کوئی بھی مسئلہ ہے تو وت منتری جی جواب دینے کے لئے کامپیٹنٹ ہیں۔

شری سکندر بخت: لیکن میں یہ عرض کرنا چاہ رہا ہوں کہ ڈائرکٹلی کسی ایک محکمہ سے

†[سشمبندھت یہ معاملہ ہے۔ یہ محکمہ سیدھے پردھان منتری جی کے ماتحت ہے۔ اس میں پردھان منتری جی کا بیان آنا چاہیئے تھا۔ اس پر کلیری فکیشن آنی چاہیئے تھیں جو مسئلے اٹھائے گئے ہیں فائنینس منسٹری کا ان سے انڈائرکٹلی تعلق ہے۔ یہ مسئلے سارے کے سارے ڈیپارٹمنٹ آف پبلک انٹر پرائزز سے متعلق ہیں۔ سارے ایلیگیشن اور ساری کمپلینٹس جو غلط کارروائی کا مسئلہ ہے وہ ڈپارٹمنٹ آف پبلک انٹر پرائزز سے تعلق رکھتا ہے اسلئے میرا کہنا یہ ہے میں اکشما چاہتا ہوں۔ اس پر پردھان منتری جی کا بیان آنا چاہیئے اور اس پر کلیری فکیشن آنی چاہیئے۔]

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अब जगेश देसाई जी कुछ कहना चाहते हैं।

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Madam Vice-Chairperson, the whole note regarding the disinvestment was given by the Department of Economic Affairs. As such, it is the Finance Minister who has to reply to it.

SHRI SIKANDER BAKHT: There was a I4-member committee. Under whom was it functioning and who were the people who did not care to function on that committee? That committee belonged to the Department of Public Enterprises.

यह कुछ उलट-पुलट हो रहा है। सदर साहेबा, माफ करें, यह बिलकुल ठीक नहीं है। प्रधानमंत्री जी हाऊस में आना अवायड कर रहे है। यह बिलकुल दुरस्त नहीं है। (व्यवधान)

† [ ] Transliteration in Arabic Script

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : आपके एतराज में अगर कोई वजन भी है तो उसको कोई कडोन नहीं कर सकता। आपको शुरू में कहना चाहिए था कि यहां प्रधानमंत्री जी जवाब दें।

श्री सिकन्दर बख्त : शुरू में दिक्कत यह है कि तमाम रश में फाइनेंस मिनिस्टर साहब का बयान आया। न कोई इसके लिए सोच सका और न कह सका, खत्म हो गया।

†[شری سکندر بخت: شروع میں دقت یہ ہے کہ تمام رش میں فائنانس منسٹر صاحب کا بیان آیا نہ کوئی اس کیلئے سوچ سکا اور نہ کہہ سکا ختم ہو گیا۔]

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : आज नहीं आया है.....(**व्यवधान**)

श्री सिकन्दर बख्त : आई एम सारी, मेरा ऐतराज नोट करें। मैं समझता हूं कि यह बहुत ही बेकायदा बात हुई है और प्रधान मंत्री जी को यहां पर आकर बयान देना चाहिए।

†[شری سکندر بخت: آئی ایم سوری میرا اعتراض نوٹ کریں میں سمجھتا ہوں کہ یہ بہت ہی بے قاعدہ بات ہوئی ہے اور پردھان منتری جی کو یہاں پر آکر بیان دینا چاہیئے]

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : ऐतराज तो आपका रिकार्ड पर आ गया है लेकिन वह ऐतराज इतनी देरी से उठा

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

रहे हैं कि अब तीन दिन हो गए हैं वित्त मंत्री को स्टेटमेंट दिए हुए। आज जब क्लैरीफिकेशन का समय आया है तब आप कह रहे हैं कि वे कम्पीटेंट नहीं है और प्राइम मिनिस्टर को आना चाहिए।

श्री सिकन्दर बख्त : हां बिल्कुल नहीं हैं कम्पीटेंट।

†[شری سکندر بخت : ہاں بالکل نہیں ہیں کومپیٹنٹ۔]

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अगर आपको यह ऐतराज था तो बी० ए०सी० में या चेयरमैन साहब के चेम्बर में या उस समय उठाया जा सकता था जिस समय वे वक्तव्य देने आए थे। आज इस समय अगर आप कहें तो मैं इस डिले को कन्डोन नहीं कर सकती हूं।

(व्यवधान)

वह आपकी बात अलग है..**(व्यवधान)** माथुर जी आप अपना क्लैरीफिकेशन शुरू करें।

श्री प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र) : महोदय, आज का थोड़ा एजेंडा तो बता दीजिए...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : आप पूछना शुरू करें।

श्री प्रमोद महाजन : वे तो करें। लेकिन इसके बाद पांच बजे स्टेटमेंट है।

एक माननीय सदस्य : हां, बता दिया है।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : पांच बजे होम मिनिस्टर आएंगे और जो दो बहसें चलीं हैं उन दोनों का जवाब देंगे।

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

श्री प्रमोद महाजन : यह जो केबुल नेटवर्क वाला बिल है आज आएगा या कल आएगा ?

(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : मिनिस्टर साहब बैठे हैं। आपको बुरा क्यों लग रहा है। मिनिस्टर साहब बैठे हैं और वे आपकी बहस सुन रहे हैं... **(व्यवधान)** प्लीज...माथुर जी आप शुरू करें। 20 मिनट में से 5 मिनट आपने इस्तेमाल कर लिए हैं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : क्यों?... **(व्यवधान)**

श्री सिकन्दर बख्त : इनके वक्त से क्या ताल्लुक है उस बात का ?

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : नहीं मैं माथुर जी को कह रही हूं कि माथुर जी आप शुरू करें।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : महोदया, जो भी वक्तव्य आया है वह पुराने वक्तव्यों से अलग नहीं है। कहावत है कि बड़े मियां तो बड़े मियां, छोटे मियां सुभानल्लाह... **(व्यवधान)** माशा अल्लाह, सुभानल्लाह....बात एक ही है।

श्री सिकन्दर बख्त : नहीं सुभानल्लाह ही है।

†[شری سکندر بخت : نہیں سبحان اللہ ہی ہے۔]

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : अच्छा। खैर, ठीक है। वह सही कर दीजिएगा। आप लोग काबिल लोग हैं... **(व्यवधान)**

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

जो बयान अब तक आते रहे है वित्त मंत्री जी के उन्हीं का रवैया ठीक इस बयान में है। जब कभी सवाल उठा बोफोर्स का, सरकार की तरफ से कहा गया कि असत्य है। जब भी सवाल हुआ बैंक स्कैम का, कहा कि असत्य है। नतीजा क्या निकला? क्या गलत है? जब निकलकर आया, देखा कि घोटाला है, उसमें गड़बड़ी है। उसी प्रकार का बयान आज भी पेश किया गया है। कहा गया है कि हम सब तरीके अपना रहे थे और कोई गलती नहीं है। परन्तु इस बयान में और दूसरे बयानों की जो पृष्ठभूमि है उसमें अंतर है। कम से कम वित्त मंत्री महोदय ने इस बयान में स्वीकार कर लिया है कि कुछ न कुछ जो शेयर ब्रोकर्स हैं उन्होंने गड़बड़ी की है और उसकी जांच पड़ताल हो रही है। कम से कम इतनी सच्ची बात उन्होंने स्वीकार की है। मगर इन्होंने दूसरे हिस्से में, बयान के, जितनी बातें कहीं हैं वे अधूरी हैं। मैं मंत्री महोदय का ध्यान बहुत संक्षेप में ही सी०ए०जी० के दो-तीन प्वाइंट्स पर आकर्षित करना चाहता हूं। पहला है—

"No efforts were made to generate widespread investor enthusiasm among the financial institutions /mutual funds about PSE shares to encourage good response from them."

इसका उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया है। केवल इतना ही कहा है—जिसे कहते है कुलिया में मुंह खोलना, अपने अपने घर के अंदर बैठकर सब फैसले कर लिए। तो सारा सवाल उठता है कि ये फैसले आपने क्यों किए। तीसरा है—

"Some of the PSEs were included in the programme of disinvestment of shares though exclusion of these was advised by PSE/Administrative Ministries on specific grounds."

अब सवाल यह उठता है कि आपने जब घर में छोटी-सी कमेटी बनाकर उसमें तय कर लिया तो आपने यह क्यों किया, इसे करने का कारण क्या था?

इसके पश्चात् मुख्य सवाल दो तीन हैं। आपने यह भी कहा है कि आई० एम०एफ० का हमारे ऊपर कोई दबाव नहीं था। लेकिन आप साथ ही यह कहते हैं—आपके वक्तव्य का जो पैरा 26 है—

"There is no doubt that there was an urgency to complete the disinvestment by end of December 1991 because of the need to contain the fiscal deficit, but this was a *legitimate* concern of Government policy."

आपको केवल दिसम्बर के अन्त तक पूरा करने की आवश्यकता क्या थी। आपने मान लिया है कि डिफिनेट जो है बजट का उसको पूरा करने की थी और दुनिया जानती है कि आई०एम०एफ० का यह दबाव रहा है कि आप डिफिसिट फाइनेंसिंग के समय आप शेयर्स का या उसका किसी प्रकार से डिफिसिट कम करें। तो यह आई०एम०एफ० का दबाव नहीं तो क्या था, क्यों था? दूसरी बात, उससे पहले आप कहते हैं—

"The decision to disinvest was not rushed. The decision to disinvest was announced by the previous Government in February, 1991."

अब पिछली सरकार का सहारा ले रहे हैं। आज तक आपने पिछली सरकार का कभी सहारा नहीं लिया। आज जब आपको फायदा दिखाई दे रहा है, आप उसका सहारा ले रहे हैं।

लेकिन इसी के साथ मैं दूसरी बात भी कहना चाहता हूं। आपको ध्यान होगा, जो यू०एन०डी०पी० की रिपोर्ट है, उसमें खास तौर से इंस्ट्रक्शंस दिए गए हैं। उसमें खास तौर से तीन-चार इंस्ट्रक्शंस दिए गए हैं। पहला, कि आप जो पी०एस०यूज० हैं उनकी कमाई का पैसा बजट के डेफिसिट को पूरा करने के लिए नहीं करेंगे--यह साफ-साफ इंस्ट्रक्शंस हैं। आपने इस ओर ध्यान क्यों नहीं दिया?

दूसरा– "do not sell through discretionary and non-transparent procedures."

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI MANMOHAN SINGH): What instructions is the hon. Member talking of? They are not instructions to me.

यह भी यू०एन०डी०पी० की एक प्रकार से इंस्ट्रक्शंस हैं। आपने इसकी अवहेलना जान-बूझ कर क्यों की... **(व्यवधान)** यह यू०एन०डी०पी० की रिपोर्ट में है।... **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : आप जवाब में बताइएगा, मनमोहन सिंह जी। अगर बार-बार इस तरह से होगा, तो हाउस चल नहीं सकेगा!

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आई०एम० एफ० का इंस्ट्रक्शन तो मानते हैं। आप कहते हैं, मान लेता हूं। रिपोर्ट है जोकि एक इंटरनेशनल बाडी का है, जिसके आप सिगनेटरी हैं। आप उसको स्वीकार करते हैं।.... **(व्यवधान)**

नाट रेस्पांसिबल, लेकिन आपने जो इंटरनेशनल स्टेण्डर्ड्ज़ हैं, उनको आपने नकारा है। सब से बड़ी चीज़ यह है कि आपने जगह-जगह कहा कि मैंने यह कमेटी बनाई, वह कमेटी बनाई, लेकिन आपने उन मेम्बर्ज के नाम नहीं दिए जोकि उन कमेटीज़ के शेयर्ज को तय करने वाले थे।

जहां तक मेरी जानकारी है, चौदह मेम्बर्ज थे, लेकिन चार ही हमेशा क्यों उपस्थित रहे, वह भी कोई ब्यूरोक्रेट्स, मि० ए० एन० वर्मा, सुरेश कुमार, एस० एस० नादकरनी, एम० एस० अहलुवालिया।

मैं पूछना चाहूंगा कि बाकी मेंबर्ज ने, किसी ने कभी आबजेक्शन किया या नहीं किया। राय दूसरी दी की नहीं दी। मेरी जानकारी यह है कि राय दी। उसी के साथ बहुत सी जो कनसर्न्ड मिनिस्ट्रीज़ थीं, आपने उनसे भी कनसल्ट क्यों नहीं किया।

शायद मुझे थोड़ा संकोच हो रहा है यह कहते हुए कि इनमें से दो सज्जन तो ऐसे हैं, जो रिश्तेदार हैं, साढ़ू हैं दोनों आपके अधिकारी। आप उन्हीं के हाथ क्यों इजाज़त देते हैं। आपने बड़ी कमेटी क्यों नहीं बनाई?

तीसरा, सब से बड़ा एक सवाल और है। यहां पर सी०ए०जी० की रिपोर्ट भी है। मैं उसी रिपोर्ट का हवाला देता हूं। उसमें से केवल एकाध उदाहरण दूंगा। बी०एच०ई०एल० के शेयर्ज़ की जो आपने रिजर्व्ड प्राइस थी 66, एवरेज 38 थी और अंडर लाइसेंस 27.95 और टोटल 13,782। आपको कहना यह है कि हमने शेयर्ज़ बेचने चाहे बंडल बना करके--बंडल की बात पर मैं बाद में आऊंगा। लेकिन जब वह शेयर नहीं बिके, तो अपने उनकी कीमतें कम कर दीं। यह तो ऐसा है, जैसे कि सब्जी

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

के बाजार में सब्जी बिकती है। दुकानदार कहता है, बहरहाल यह पचास पैसे की है, शाम हो जाती है, तो वह कहता है पचास नहीं, दस पैसे ही दे दें। आखिर-कार, यह जो आपने प्राइस पहले फिक्स की थी और बाद में घटाई, क्यों घटाई? इसको घटाने के लिए अधिकार किसका था—क्या यही चार आदमी थे?

इसी के साथ में आप यह कहते हैं कि हमने कीमतें घटाई, क्योंकि वह बाजार में बिक जाते हैं। परन्तु क्या आपको नहीं मालूम है कि उन्हीं घटी हुई कीमतों पर जब वह बाजार में गया, उन्हीं ब्रोकर्ज ने मंहगी कीमत पर उसे बेच दिया। जो घपला होता है, वह यहीं पर होता है कि आप शेयर्ज बेचते हैं सस्ते दाम में, यह कह कर कि बिजनेस नहीं मिला, लेकिन उसके साथ वही शेयर्ज बेचता है ब्रोकर ज्यादा मंहगाई के साथ और फायदा उठाता है। यह घपला करने की इजाजत किसने और क्यों थी?

मैं उदाहरण दे रहा हूं।

"Allahabad Bank bought a bundle (No. 66) of shares on February 10, 1922. On the last day of the financial year, it sold them off to YSN Securities, associate of C. Mackeritch & Stewart & Co. etc., Allahabad. Allahabad Bank purchased at Rs. 13.2 crores. They were going to Kayan's outfit for Rs. 20.06 crores."

मेरा आरोप यह है कि आपने बाजार में कीमतें दी। आपका कहना है कि पूरी कीमत नहीं आई। आपने फिर जैसे सब्जी बेचने वाला शाम को सस्ता बेच देता है, बेच दिया। लेकिन वही शेयर, वही चीजें बाजार में बिकती हैं और ब्रोकर्स फायदा उठाते हैं। मेरा आरोप है और मुझे इसका जवाब चाहिए? मुझे जवाब चाहिए कि यह जो कीमत घटाई गई किसके अधिकार से घटाई? कौन आफिसर थे? अगर वह आफिसर थे तो उनके खिलाफ आपने क्यों कार्यवाही नहीं की और की जानी चाहिए थी?

अब केवल पांच मिनट रह गए हैं इसलिए मैं केवल डिमांड्स जल्दी-जल्दी रख देता हूं। फिर मेरे सामने बहुत बड़ा सवाल है, सारे सदन का मैं ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। हमारे सामने एक बयान मंत्री महोदय का है और दूसरी रिपोर्ट यह सी०ए०जी० की है। हम किस पर विश्वास करें? सी०ए०जी० की रिपोर्ट पर विश्वास करें या मंत्री जी पर करें? सी०ए०जी० की रिपोर्ट के बारे में कुछ छोटे-मोटे जवाब दे देना सदन में पर्याप्त नहीं होगा इसलिए मेरी सदन से मांग है और मंत्री महोदय से कहूंगा कि सी०ए०जी० की रिपोर्ट और आपके बयान की जांच की जानी चाहिए? जांच कौन करेगा? आपने कहा कि जांच तो हम करा रहे हैं। उस जांच से नहीं चलेगा। अगर कृष्ण-माचारी के केस में छागला की अध्यक्षता में कमेटी बन सकती है, उस प्रकार की कमेटी बनाई जाए। चाहे वह इन्कवायरी कमेटी के रूप में हो या किसी रूप में हो? उसकी इन्क्वायरी कराई जानी चाहिए कि जिम्मेदार कौन हैं। केवल वित्त मंत्री महोदय का बयान के ऊपर हम सन्तुष्ट नहीं हो सकते, क्योंकि उसके मुकाबले पर सी०ए०जी० की रिपोर्ट है। तो सी०ए०जी० की रिपोर्ट और आपका बयान और सारी खोज-बीन के लिए कमेटी बननी चाहिए और इन्क्वायरी की जानी चाहिए उसके बिना देश सन्तुष्ट

नहीं होगा। अन्त में, यह पूछ चुका हूं कि वह घटाने का डिसीजन किसने लिया था और आखिरी सवाल है, क्योंकि एक मिनट रह गया है, मैं बंद करूंगा, महोदया ।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : तीन मिनट हैं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आपने लिखा है कि इन्क्वायरी की जा रही है या की जाएगी, मैं पूछना चाहूंगा कि इन्क्वायरी किस बात की हो रही है और कौन कर रहा है? क्या इस बात की इन्क्वायरी हो रही है कि ब्रोकर्स ने कैसे पैसा कमाया या इस बात की हो रही है कि मंत्रालय में कौन जिम्मेदार है या इस बात की हो रही है कि शेयर मार्केट भाव क्यों बढ़े थे और यह कौन करेंगे? क्या डिपार्टमेंट करेगा? अगर आपके डिपार्टमेंट के अधिकारी करने वाले हैं, वर्मा जी या अहलुवालिया जी यही करने वाले हैं तो उससे संतोष नहीं होगा। क्यों, इस घोटाले में बैंक के डिसइन्वेस्टमेंट में गड़बड़ का प्रश्न केवल यहां तक सीमित नहीं है। यही एक मूल कारण है जिस कारण से इसके बाजार में शेयर्स के भाव बढ़े। बैंकों का स्कैम इससे पैदा हुआ है। उसके बेसिस में यह शेयर्स हैं, यह डिसइन्वेस्टमेंट है। आज मेहता ने जो कुछ किया है, सब जानते हैं उसने मुंह क्यों खोला सब जानते हैं। क्योंकि डिसइन्वेस्टमेंट के घोटाले के भीतर जो ब्रोकर्स थे उनको आप छोड़ रहे थे और मेहता को फंसा रहे थे। उसे फंसाने के कारण से सारी उसने जबान खोली है।

एक बात और कहना चाहता हूं। सवाल समय का रह गया है। मैं सदन का ध्यान दिलाना चाहूंगा बम्बई का जो एक्सचेंज है उसके फिगर्स निकलते हैं। क्या कारण है कि जिस दिन से यह सरकार आपकी आई उस दिन से इंडेक्स बढ़ना शुरू करता है और पराकाष्ठा तक पहुंच जाता है। क्यों पहुंचता है, आखिर क्या संदेह इसमें है कि मनमोहन सिंह जी, आप ईमानदार भले आदमी हैं, मुझे कोई शक नहीं है। आपने घोटाले में पैसे हरगिज नहीं लिए और न लेने की आपकी नीयत है, न आपके लेने की कैपेसिटी है। लेकिन सवाल यह है कि कौन-कौन अधिकारी इसमें सम्मिलित हैं और कौन-कौन राजनीतिज्ञ इसके अंदर सम्मिलित हैं? आरोप लगा है प्रधान मंत्री पर, मैं उस विषय में जाना नहीं चाहता, लेकिन आरोप और भी लगे हैं। इसलिए हमें बताइए कि इन्कवायरी कौन कर रहा है, क्यों कर रहा है, कैसे कर रहा है और कब होगी? महोदया, अब समय की घड़ी मुझे अपना भाषण समाप्त करने के लिए इशारा कर रही है,

5-00 P. M.

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : आप बोलिए, अभी होम मिनिस्टर साहब नहीं आए हैं, तब तक आप बोलिए।

श्री सिकन्दर बख्त : सईद साहब तो बैठे हैं?

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : सईद साहब को तो बुलाया था, राजेश पायलट जी वक्तव्य देंगे।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैडम, मैं तो कंक्लूड कर रहा था, अब फिर वापिस आता हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) : जब तक वह न आ जाएं तब तक आप

बोलते रहिए और अगर आप खत्म कर रहे हैं तो मैं जगेश जी को शुरू करवा देती हूं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: महोदया, अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि आज घोटालों के कारण देश की आर्थिक स्थिति में संदेह पैदा हो गया है।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Is Mr. Rajesh Pilot suffering from jet-lag?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI SUSHMA SWARAJ): He is coming. I have already asked.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: आपने हिम्मत के साथ यह कहा है कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में हमारी साख घटी नहीं है।

श्री मनमोहन सिंह: बढ़ी है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: भगवान आपके शब्दों को सच्चा सिद्ध करें, लेकिन ऐसा लगता नहीं है इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि आज जो संदेह पैदा हुए हैं, उनको आप स्पष्ट करें।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): श्री जगेश देसाई। गृह राज्य-मंत्रीजी भी आ गए हैं।

SHRI JAGESH DESAI: Madam Deputy Chairperson, only one sentence.

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): एक सेंटेंस में आप क्या बोलेंगे।?

SHRI JAGESH DESAI: I will start so that my claim will be there.

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): आप का क्लेम तो है ही।

SHRI JAGESH DESAI: Madam, the Finance Minister has given a very, very exhaustive statement without concealing any facts. I compliment the Finance Minister on disclosing the total facts as they stood from the beginning to the end.

Madam, now you may call the Minister.

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज): अब गृह राज्य-मंत्री बयान देंगे।

STATEMENT BY MINISTER

Fatal Bomb attack on Shri P. Siva Reddy, Telugu Desam M.L.A., Andhra Pradesh

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI RAJESH PILOT): Madam, with your permission. 1 make a statement on the fatal bomb attack on Shri P. Siva Reddy, Telugu Desam ML.A. (*Interruptions).*

[The Deputy Chairman in the Chair]

As per the information received from the State Government, Shri P. Siva Reddy, Telugu Desam (TDP) MLA from Jammalamadugu was attending the Monsoon Session of the A.P. Legislative Assembly. He was provided with two State Police guards. He also had two private gunmen who accompanied him.

On 7-8-1993 at about 9.00 A.M. Shri P. Siva Reddy. MLA (TDP) alongwith the official gunman Shri K. Nathaneil, Head Constable 477 and two more private gunmen visited the house of Shri N. Chandrababu Naidu, M.L.A. (TDP) and from there he visited the house of Shri D. Venkateswara Rao. MP (TDP) at Banjara Hills, at 10.30 A.M. At 11.40 A.M., Shri P. Siva Reddy asked Shri K. Nathaneil and his two private gunmen to go back to his quarter. No. 135. New MLA Quarters, and he proceeded with Shri Kala Venkata Rao, M.L.A. ITDP) in a Maruti car to attend a marriage at Shri Satya Sai Kalayana Mandapam. Srinagar Colony, without taking any securitymen with him. The gunman of Shri Rao was also not with him. Around